1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विभिन्न भाषाओं में दयानन्दकृत अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश"

वर्ष 47, अंक 44 | एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 16 सितम्बर, 2024 से रविवार 22 सितम्बर, 2024

विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125

दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर आर्यसमाज चेन्नई द्वारा स्थापित

वैदिक विद्या केन्द्र, पुदुचेरी (पाण्डिचेरी) का उद्घाटन

ज्ञान ज्योति पर्व योजना में एक वर्ष तक होते रहेंगे अनेकानेक कार्यक्रमों के आयोजन

वर्तमान गतिशील कालखंड आर्य समाज के लिए ऐतिहासिक और आर्यजनों को गौरवान्वित करने वाला है। क्योंकि आज आर्य समाज एक नए युग की ओर आगे बढ़ रहा है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर संपूर्ण भारत में और विश्व भर में अत्यंत उमंग उत्साह का वातावरण निर्मित है। आर्य समाज के इस ऐतिहासिक प्रेरणाप्रद क्रम में 15 सितंबर 2024 को आर्य समाज फाऊंडेशन चेन्नई द्वारा पुदुचेरी में एक अत्यंत भव्य और आकर्षक तथा प्रेरक वैदिक विद्या केंद्र का उद्घाटन संपन्न हुआ। इस अवसर पर देश-विदेश से सैकड़ों आर्यजन और आर्य नेता उपस्थित रहे। - *जारी पृष्ठ 4 एवं 7 पर*

पितृपक्ष - श्राद्ध पर्व
(18 सितम्बर-2 अक्तूबर)
पर विशेष

पितृयज्ञ का पालन करना ही है - सच्चा श्राद्ध

हमारी वैदिक संस्कृति संपूर्ण विश्व में आदर्श, उज्ज्वल और श्रेष्ठ संस्कृति है। वैदिक संस्कृति का सूर्य मानव मात्र को पारिवारिक, सामाजिक एवं वैश्विक दृष्टि से सेवा-साधना के लिए प्रेरित करता है। प्राचीन काल में हमारे यहां माता-पिता, आचार्य से लेकर समाज के वरिष्ठ नागरिकों के सेवा सम्मान करने की परंपरा थी। इस सेवा भाव को यज्ञ के समान महत्व दिया जाता था।

-शेष पृष्ठ 7 पर

......आज जीवित माता-पिता अपमान और तिरस्कार का जीवन जीने के लिए मजबूर तथा बेबस नजर आते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में, टी.वी. चैनलों पर दिल दहलाने वाली खबरें आती है कि अमुक स्थान पर स्वार्थवश कोई पुत्र अपने पिता को जान से मार देता है या कोई पुत्री अपनी मां को प्रताड़ित करते हुए नजर आती है। इससे बड़ी विडम्बना यह है कि जीवित माता-पिता को तो हर तरह की पीड़ा और कष्ट झेलने के लिए मजबूर किया जाता है। लेकिन जब वें नहीं रहते, उनके मर जाने के बाद वर्ष में एक बार, एक दिन उनके श्राद्ध के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन आदि कराकर यह समझा जाता है कि हमने अपने माता-पिता और पूर्वजों को भोजन कराया है। और यह कर्म भी लोग डर के मारे करते हैं। क्योंकि समाज में यह डर पैदा किया हुआ है कि अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको पितृ दोष लग जाएगा। ...... अगर गहराई से विचार किया जाए तो वास्तव में जो जीवित हैं उन्हीं की तो हम सेवा कर सकते हैं जो नहीं रहें उनकी सेवा कैसे संभव हो सकती है? उन्हें कोई कैसे भोजन करवा सकता है? जो ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है वह तो उसके निजी जीवन को पुष्टि देता है, सन्तुष्ट करता है और जिनके नाम पर श्राद्ध के रूप में उन्हें भोजन कराया जाता है। ब्राह्मण को क्या पता कि वे कहां पर हैं? किस योनि में हैं?क्योंकि ईश्वरीय कर्म सिद्धांत के साथ अनुसार मृत्यु के कुछ समय पश्चात् ही आत्मा नया शरीर धारण कर लेता है। शरीर के रूप में उसे कौन सा, कैसा शरीर मिला तथा उसका आहार क्या होगा? किसी को क्या पता? लेकिन बस एक परंपरा स्थापित हो गई, जिसे लोग बिना विचारें ही निभाते चले जा रहे हैं।......

दिल्ली आर्यसमाज द्वारा संचालित विभिन्न कार्यों, प्रकल्पों, योजनाओं, गतिविधियों की जानकारी एवं समीक्षा हेतु

एक दिवसीय विशेष सत्र-पूर्णकालिक बैठक

बुधवार 2 अक्तूबर, 2024 | समय : प्रातः 7:30 से सायं 6 बजे

स्थान : आर्यसमाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-48

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, दिल्ली आर्यसमाज, महिला आर्यसमाज एवं आर्य संस्थाओं के प्रमुख अधिकारीगण अनिवार्य रूप से पधारना सुनिश्चित करें।

देववाणी-संस्कृत

मन की अपार शक्ति को चैतन्य कर

वेद-स्वाध्याय

आ त एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक् च सूर्यं दृशे।।
-ऋ० 10/57/4
ऋषिः - बन्धुःसुबन्धुः।। देवता - विश्वेदेवाः।। छन्दः - निचृद्गायत्री।

शब्दार्थ- मनः =मन का **ते** =तुझमें **पुनः**=फिर **आ एतु**= प्रवेश हो जाए, जिससे कि तू **क्रत्वे**= कर्म करने लगे दक्षाय= तुझमें बल आ जाए **जीवसे** = जीवन आ जाए **ज्योक् च**= और तू चिरंजीवी होता हुआ **सूर्य दृशे**= निरन्तर सूर्यदर्शन करता रहे।

विनय- हे मनुष्य! जो तू इतना निर्बल, हतोत्साह और शिथिल हो गया है, इसका कारण तेरे मन की निर्जीवता है। तेरा मन निर्जीव हो गया है, मानो तुझमें मन रहा ही नहीं है। तेरे रोग का और कोई कारण नहीं है। तू अपनी इस मन्दता को निर्बलता को दूर करने के लिए यों ही अप्राकृतिक दवाएँ खाता फिरता है; इनसे कुछ नही बनेगा। ''वहम का इलाज लुकमान के पास भी नहीं है।'' वहम को छोड़कर अपने अन्दर तनिक उस जगद् व्यापक मन की धारा को प्रविष्ट होने दो जो सबं संसार में व्यापक है और सब संसार को चला रही है-प्रत्येक मनुष्य के मन को हिला रही है। उस मनोमय धारा को तू जितना अपने अन्दर ग्रहण करेगा उतना तेरा मन सजीव होता जाएगा। तब तू फिर से ठीक तरह 'क्रतु' - कर्म कर सकेगा। तेरे अन्दर 'दक्ष' - बल आ जाएगा और तुझमें एक नये जीवन का संचार हो जाएगा तथा जगत् प्राण देनेवाले जो सूर्यदेव है उनका दर्शन करता हुआ- उनसे प्राण लेता हुआ तू दीर्घ आयु तक जीवित रहेगा। यह सब मनःशक्ति के प्रवेश का चमत्कार है, अतः हमारी तो परमात्मा से यही प्रार्थना है कि तुझमें मनः शक्ति का प्रवेश हो । इसी में तेरा कल्याण है। मनःशक्ति के बिना तो अन्य किसी भी उपचार से लाभ नहीं उठाया जा सकता, अतः मन ही को बढ़ा, मन ही को जगा, मन ही को चैतन्य कर।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

वाराणसी का पिशाचमोचन मोहल्ला और पितृपक्ष में भूतों की मंडी

भूत-प्रेत विश्वास के या अंधविश्वास के?

उत्तर प्रदेश के बनारस शहर में पिशाचमोचन ऐसा मोहल्ला है जहां दुनिया के हर मर्ज का इलाज और सभी मुश्किलों के समाधान का दावा किया जाता है। शर्त इतनी है कि इसके लिए मानना होगा कि आपके ऊपर किसी भूत-पिशाच अथवा प्रेत का साया है और आप सचमुच उनसे मुक्ति पाना चाहते हैं। दूसरी शर्त यह है कि पिशाचमोचन के पंडों के हाथों हर तरह का इलाज कराने के लिए आप तैयार हैं। भूतों से मुक्ति पाने की तीसरी और अंतिम शर्त होती है, इलाज के नाम पर गाली-गलौज झेलने और हद तक मारपीट सहने की ताकत भी होनी चाहिए।

पितृ पक्ष आते ही इन दिनों वाराणसी स्थित पिशाचमोचन मोहल्ले में बकायदा भूतों की यह अनोखी मंडी सज गई है। भूतों को बैठाने के नाम पर मोल-भाव शुरू हो गया है। भूतों से मुक्ति दिलाने के नाम पर रुपये ऐंठने वालों का एक बड़ा जत्था शहर भर में घूम रहा है। यहाँ भूत भगाने के लिए मोलभाव होता है, यानी कौन सा पंडा भूत उतारने का दाम कितना लेगा। दलालों के चंगुल और अंधविश्वास में फंसे लाखों लोग यहां हर साल भूतों से मुक्ति पाने के लिए आते हैं और ठगे जाते हैं। पिशाचमोचन कुंड में भूतों को बैठाने के नाम पर मोटी उगाही की जाती है।

''भूत'', जैसा कि अंधविश्वास है कि व्यक्ति के मरने के बाद की योनि। अंधविश्वास पर भरोसा करने वालों को बताया जाता है कि पिशाच या प्रेत बहुत से लोगों को हमेशा परेशान करते रहते हैं। श्राद्ध और आत्मा की शांति के लिए होने वाले सभी विधि-विधान यहां संपन्न कराए जाते हैं। पिशाचमोचन पर पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार के लगभग सभी शहरों, ख़ासकर ग्रामीण क्षेत्रों से और हर उम्र के लोग आते हैं, जिनमें महिलाओं की संख्या बहुतायत होती है। इनमें अधिक संख्या वे अंधविश्वासी लोग होते हैं जो पुरानी रुढ़ियों में जकड़े हुए हैं।

अब ऐसा तो कभी सुनने में आया नहीं कि अडानी के परिवार में किसी को भूत चिपट गया। या अम्बानी की बेटी पर चुड़ैल का साया है। कभी नहीं सुना कि बिरला ग्रुप या टाटा ग्रुप के परिवार के किसी सदस्य के अंदर भूत प्रेत ने वास कर लिया। किन्तु दूसरी ओर बड़ी संख्या में गरीब या अशिक्षित लोग होते हैं, जो आसानी से मान लेते हैं कि उनके ऊपर भूत प्रेत का साया है, यानी जहाँ अशिक्षा और गरीबी, वहीं भूतों का डेरा।

दूसरा बॉलीवुड की मूवी जिनमें अनेक बार पुराने मकानों, किलों, हवेलियों में भूत-प्रेत या भटकती आत्माएं दिखाई जाती हैं। आज भी भारत में ऐसे कई स्थान हैं जहां भूत और प्रेतात्माओं का साया माना जाता है। राजस्थान के अलवर जिले का भानगढ़ और कोटा का बृजराज भवन पूरी दुनिया में अपने ''भूतों'' के कारण बदनाम हो चुका है। खाली किले, खंडहर, पुराने मकान, उन पर भी भूत-प्रेत कब्जा किए बैठे हैं।

अब मानकर चलिए कि भूत एक तो गरीब को निशाना बनाता है और दूसरा उसे फाइव स्टार जैसी जगह पसंद नहीं, उसे खंडहर, किले, मकान पसंद हैं। वो झोपड़ी में रहने वाले दिहाड़ी मजदूर, निम्न से भी निम्न वर्ग को चिपटता है।

इसी कारण आज भूत भगाने के लिए भारत भर में हजारों की संख्या में दरगाहें, ओझा, सयाने, भोपे, मजार, ना जाने कितने लोग सिर्फ और सिर्फ भूत भगाने के कारोबार में लगे हुए हैं। और जब ऐसी मूवी आती है तो लोगों को लगता है कि यह सब सच में होता है, इस कारण इनका कारोबार बड़ी संख्या में बढ़ जाता है।

आपने एक शब्द सुना होगा भटकती आत्मा, यानी आत्मा शरीर से निकलकर दूसरे किसी ज़िंदा व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाती है। फिर उससे जो चाहें, वो करा लेती है। लेकिन जब उस दो आत्माओं वाले व्यक्ति को किसी दरगाह पर ले जाया जाता है, तो वो आत्मा भाग जाती है या बाबा ऐसा मंत्र फूंक देता है कि भटकती आत्मा शरीर छोड़ देती है, फिर दूसरे किसी गरीब के शरीर में घुस जाती है।

अंधविश्वास की नगरी में यूँ तो आत्माओं के कई प्रकार हैं। कुछ भटकती आत्माएं शरीर में घुस जाती हैं, तो कुछ आत्मा पुराने खंडहर, किले या हवेली खोज लेती हैं। कुछ शमशान घाट में रहने लगती हैं, तो कुछ को बाबा बोतल में बंद कर लेते हैं। कुछ

आत्मा चार लात लगते ही भाग जाती हैं, तो कुछ आत्माओं को कपड़े, फल, मिठाई की जरूरत पड़ती है। कुछ आत्मा खून पीती हैं।

यानि आत्माओं की एक बड़ी कैटेगरी है, जिन्हें बाबा ही बस में कर सकते हैं। ध्यान रखें, आत्मा सिर्फ इंसान की भटकती है, वो भी उनकी जिनकी अकाल मृत्यु हो जाना बताया जाता है। लेकिन हर रोज लाखों की संख्या में मुर्गे काटकर खाने वाले क्या बता सकते हैं कि वो मुर्गे की काल मृत्यु थी या अकाल मृत्यु? लाखों की संख्या में गाय, भैंस, बकरी, भेड़ काटे जाते हैं, क्या वो उनकी अकाल मृत्यु नहीं होती? उनकी आत्मा कहा जाती है, वो आत्मा क्यों नहीं चिपटती? ये एक सवाल है और सवाल का कारण यह है कि आज भूत-प्रेत के नाम पर जो कारोबार खड़े किए जा रहे हैं, इनमें गरीब इंसान को चूसा और निचोड़ा जा रहा है। भूत के नाम पर लोगों को भयभीत कर अपना ठगी का धंधा बड़ी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है।

जबकि सनातन संस्कृति में भी जिस आत्मा का जिक्र होता है, जो शरीर से निकल जाती है, उसके बाद उस व्यक्ति को मृत कहा जाता है। आत्मा का कोई रंग, रूप, गंध, आकार नहीं होता है और न ही ये दिखाई देती है। आत्मा अपनी कुछ दिनों की यात्रा कर परमात्मा में विलीन हो जाती है या पुनः दूसरे शरीर को प्राप्त कर लेती है, ऐसा माना जाता है।

लेकिन यहाँ से आगे बताया जाता है कि जिन आत्माओं को शरीर नहीं मिलता, जो समय से पहले निकल जाती हैं, उनकी प्रेत योनि में भटकना मजबूरी हो जाती है। ऐसी आत्माओं को ही भूत का नाम दिया जाता है। अगर इस कथन पर विश्वास कर लें तो क्या इंसान का जीवन-मरण ईश्वर के अधीन नहीं होता? क्या ऐसा हो सकता है कि ईश्वर के न चाहते हुए भी इंसान मर जाते हैं और शरीर कम पड़ जाते हैं? अगर ऐसा है, तो फिर दुनिया को ईश्वर नहीं बल्कि बाबा, ओझा, भोपे, मजार, दरगाह चला रहे हैं?

यह साफ है कि यह भूत-प्रेत, जिन्न, पिशाच सिर्फ गरीबी, मनोविकार अशिक्षा के कारण पैदा होते हैं। किसी अमीर के सिर यह नहीं आते, जबकि उनके सिर आकर वो देश-विदेश भी घूम सकते हैं। फाइव स्टार होटल में रहकर मजे कर सकते हैं। क्यों वो खंडहर, पुराने, बदबूदार किले में जाकर रहते हैं, इसका कारण यही है कि भूत या तो डरपोक होते हैं या फिर मूर्ख कुछ भी, लेकिन यह सच है कि आत्मा और भूत के नाम पर बहुत बड़े कारोबार चल रहे हैं, करोड़ों रुपये कमाए जा रहे हैं। गरीब और बीमार लोगों को डंडों से, गर्म लोहे की रॉड से मारा-पीटा जा रहा है। हमारा संविधान सभी को अपने धर्म और रीति-रिवाज के पालन का भी अधिकार देता है, लेकिन उसके नाम पर अंधविश्वास फैलाने की कतई इजाजत नहीं है। इसलिए हर तरह के अंधविश्वास का विरोध करना, उसका पर्दाफाश करना हमारा नैतिक ही नहीं, संवैधानिक कर्तव्य है। - **संपादक**

बाल बोध

समय का सदुपयोग और सफलता

.....बच्चो, आर्य संदेश के इस अंक में हम समय के सदुपयोग पर बात करेंगे। समय बहुत मूल्यवान संपदा है। समय सबके लिए समान है। कुछ विद्यार्थी समय का सदुपयोग करते हैं, कुछ नहीं करते और कुछ दुरुपयोग करते हैं। समय एक गति है, एक बहाव है, जो अनवरत बहता है। इस अमूल्य समय की धरा को पहचानकर कुछ विद्यार्थी सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचकर अपना, अपने माता-पिता का और अपने राष्ट्र का नाम ऊंचा करते हैं। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी होते हैं जो समय की कीमत को नहीं पहचानते और असफल होने पर अपने दुर्भाग्य को कोसते ही रह जाते हैं। लेकिन समय फिर लौटकर नहीं आता, इसलिए समय की गति को पहचानकर अपने जीवन को सफल बनाओ।.....

विद्यार्थी जीवन में खेलने-कूदने का, हास-परिहास का, मनोरंजन और प्रसन्न रहने का पढ़ाई के साथ बहुत गहरा संबंध है। पर समय सारिणी बहुत ज़रूरी है। दुनिया में जिसने भी सफलता का परचम लहराया है, उनकी यह खास बात रही कि उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया। क्योंकि इसी समय के प्रवाह में विद्यार्थी प्रोफेसर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर या वह जो कुछ भी बनना चाहे, बन सकता है। इसके विपरीत वह समय बरबाद करके स्वयं बरबाद भी हो सकता है, उसके लिए पतन के रास्ते भी सदैव खुले रहते हैं। इसलिए अपने अनमोल समय को उत्तम कार्यों के लिए विभाजित करके अपनी प्रतिभा का समुचित विकास करें।

खेल (क्रीड़ा) एक ऐसा विषय है- जिसमें विद्यार्थी का ध्यान एक स्थान पर टिक जाता है। फिर उसे अन्य कुछ याद नहीं रहता, वह पूरी तरह खेल में मग्न हो जाता है। खेलने पर शरीर से पसीना निकलता है, रक्त संचार होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। शारीरिक विकास के लिए उपयोगी है। लेकिन इतना ज़्यादा खेलना भी उचित नहीं कि शरीर थक जाए और जब आप पढ़ाई करने या कोई अन्य कार्य करने लगें तो शरीर में दर्द होने के कारण आपका ध्यान बार-बार खेल पर ही जाए। यूं तो विद्यार्थी को मधुर व्यायाम करना चाहिए। थोड़े उपयोगी योगासन, दौड़, सर्वांग सुन्दर व्यायाम आदि लेकिन समय का ध्यान रखकर ऐसा करना चाहिए। ऐसे नहीं करना चाहिए कि खेलने पर आए तो बस पूरा दिन खेलते ही रहे।

हंसना सकारात्मक प्रक्रिया है। हंसने से मस्तिष्क विकसित होता है। विद्यार्थी को दिन में चार बार नि:संकोच होकर हंसना चाहिए लेकिन यह ध्यान रहे कि तुम्हारे हंसने से किसी को दु:ख न पहुंचे। किसी को चिढ़ाना नहीं, व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग मत करना और अच्छी बातों पर हंसना अच्छी बात होती है। अगर कोई आपका हितैषी आपको डांट दे, तो आप उस समय उसको हंसी में टाल दो, कभी अकेले में उस पर विचार तो कर लेना पर मन में गांठ मत बांधना। अपने स्वभाव को सौम्य, शिष्ट और हंसमुख बनाकर रखना उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। हंसने के लिए कुछ अच्छे चुटकुले हो सकते हैं, कोई अंताक्षरी, प्रतियोगिता कर सकते हैं, हंसने के कई और बहाने हो सकते हैं। लेकिन हंसी मज़ाक में इतना मत रम जाना कि दुनिया तुम पर ही हंसने लगे। टी.वी., मोबाईल आदि मनोरंजन के लिए जितना उपयोगी है, उससे कहीं ज़्यादा खतरनाक भी सिद्ध हो सकता है। आजकल कोरोना काल के चलते अब मोबाइल का उपयोग ज्यादा हो गया है, इसके साथ-साथ टी.वी. भी देखना भी ज्यादा सुलभ हो गया है। किन्तु टी. वी. और मोबाइल का सही उपयोग किया जाए तो अच्छी बात है वरना इनके दुष्प्रभाव से बचना बड़ा कठिन है। ये दोनों उपकरण मनोरंजन के साथ-साथ विद्यार्थी को अनेक तत्वों का बोध भी होता है। सामान्य ज्ञान के लिए भी यह अच्छा साधन है, लेकिन ज़्यादा प्रयोग करने से भी विद्यार्थी की हानि भी होती है। शारीरिक हानि-आंखें कमजोर हो जाती हैं, मानसिक-मन पढ़ाई में नहीं लगता और स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है। कुछ विद्यार्थी लगातार टी.वी./मोबाइल पर नजर गड़ाए रखते हैं, अपना कीमती समय वे नष्ट कर देते हैं।

जो उन्हें याद रखना चाहिए उसे स्मरण नहीं करते, टी. वी. के कार्यक्रम दिमाग में नोट कर लेते हैं। दरअसल एक्टर, डायरेक्टर और प्रोडयूसर से कभी आप मिलेंगे तो ज्ञात होगा कि यह सब ड्रामा मात्र है। एक कहानी के ऊपर एक्टर एक्टिंग करता है, डायलाग बोलता है और उसमें अनेक लोगों का परिश्रम होता है। लेकिन एक्टर फिल्म या नाटक की आत्मा की तरह होता है। कुछ भी हो, सारे कार्य एक्टर को महान दर्शाने के लिए होते हैं। इसलिए अच्छे दृश्यों को देखने का प्रयास करो। टी.वी. देखना अच्छी बात है, लेकिन सीमाएं (मर्यादा) समय का ध्यान रखकर और अच्छे, उपयोगी प्रोग्राम देखें तो विशेष लाभ होता है। टी.वी. से हम शिक्षा ले सकते हैं, पर विद्यार्थी की एक समय सीमा होती है। सीमा में रहकर हर कार्य करना उचित है। कवि ने भी प्रसंग के अनुरुप अच्छा कहा-

अति की भली न बोलना,
अति की भली न चुप।
अति की भली न बरसना,
अति की भली न धूप।।

जैसे ज्यादा बोलना भी अच्छा नहीं होता और अधिक मौन रहना भी अनुचित है। ज़्यादा वृष्टि भी अच्छी नहीं होती और अधिक धूप भी हानिकारक है। इसलिए टी.वी. को जी का जंजाल मत बनाओ। सप्ताह में एक दिन या दिन में कोई समय निश्चित कीजिए। जिससे आपको समय की हानि न हो और उचित लाभ प्राप्त हो सके। जब आप समय का सदुपयोग करेंगे, तब आपको स्वयं प्रसन्नता होगी। प्रसन्नता परमात्मा का प्रसाद है। विद्यार्थी को अपने जीवन में प्रसन्नता अपनानी चाहिए। चेहरे पर ताजगी हो, मुख पर मुस्कान हो और हिम्मत के भाव हों, कुछ कर दिखाने की चाहत उसके अन्दर से झलकनी चाहिए। समय कैसा भी हो विपरीत हो या अनुकूल हो, हौंसले के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

निराशा को कभी अपने पास मत आने देना, मूड खराब मत करना और निरन्तर परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर उन्नति के मार्ग पर अवरोधों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहना ही सफलता की निशानी है। अगर विद्यार्थी किसी कारण से अथवा अपने आलस्य, प्रमाद से, समय के दुरुपयोग से असफल हो भी जाता है तो उसे निराश नहीं होना चाहिए। ये विशाद की स्थिति नहीं होती बल्कि जागने का संकेत होता है। समय की कीमत को पहचानने का सुनहरा अवसर होता है।

- ***संपादक***

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

-: प्रथम पुरस्कार :-
1,00,000/- रुपये एवं विशेष उपहार।

द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।
2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)
3. प्रश्नपत्र को भरकर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001**' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।
4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।
5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।
6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।
7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र '**साप्ताहिक आर्यसन्देश**' में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा की वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।
8. सभी पुरस्कार '**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2025**' में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।
9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

केवल दक्षिण भारत ही नहीं विश्व स्तरीय मानव कल्याण का केन्द्र बनेगा यह वैदिक विद्या केन्द्र - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्व. सभा

14 सितंबर 2024 को आगंतुक महानुभवों का वैदिक विद्या केंद्र की ओर से उपप्रधान, श्री पीयूष आर्य जी, प्रधान, श्री राजीव चौधरी जी, सचिव, श्री विकास आर्य जी, श्री रवि मल्होत्रा जी एवं श्रीमती प्रमिला गोर जी द्वारा केन्द्र में पधारने पर अभिनंदन और स्वागत किया गया। इसके साथ ही पूरे वैदिक विद्या केंद्र का सभी लोगों ने अवलोकन किया और इस ऐतिहासिक और अनुपम विद्या केंद्र के निर्माण की सराहना की।

15 सितंबर 2024 को स्वामी मुक्तानंद जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से कार्यक्रम का आरंभ हुआ, जिसमें उपस्थित सभी यजमानों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना की। इस यज्ञ में स्वामी प्रणवानंद जी, आचार्य स्वामी देवव्रत जी, आचार्य सूर्य देवी जी ने अपने संबोधन में यज्ञ की महिमा और आर्य समाज के इस नव निर्मित केन्द्र तथा सेवा कार्यों को आधार बनाकर सभी यजमानों को कल्याणकारी संदेश और आशीर्वाद दिया। इसके उपरांत विद्या केंद्र की ओर से प्रतिनिधियों द्वारा डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से किस तरह से इस केन्द्र द्वारा विश्व में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार प्रसार किया जाएगा, इसका दृश्य उपस्थित आर्यों को दिखाया।

वैदिक विद्या केंद्र के उद्घाटन समारोह में आर्य जगत के सुप्रसिद्ध आर्य नेता, विद्वान, सन्यासी उपस्थित रहे, जिनमें स्वामी प्रणवानंद जी, स्वामी मुक्तानंद जी, स्वामी देवव्रत जी, आचार्य सूर्य देवी चतुर्वेदा जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य जी और अनेक अन्य विद्वान तथा आर्य नर नारी उपस्थित थे।

श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में वैदिक विद्या केंद्र के लक्ष्य और उद्देश्य का संकेत करते हुए कहा कि यह वैदिक विद्या केंद्र केवल दक्षिण भारत में ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के प्रचार-प्रसार का अदभुत केंद्र सिद्ध होगा। यहां पर प्रकृति का जो मनोरम वातावरण है, जिसमें ध्यान साधना और वेदादि शास्त्रों का अध्ययन, चिन्तन, मनन गहराई से किया जा सकता है। यह वातावरण हर आयु वर्ग के आर्यजनों के लिए अनुकूल होगा क्योंकि यहां प्रकृति के मनोहारी वातावरण में सभी के लिए आधुनिक संसाधनों से युक्त आवासीय सुविधाएं हैं और यहां वर्ष भर कार्यक्रम चलने वाले हैं। इस अवसर पर वैदिक विद्या केंद्र में प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रदान करने वाला गुरुकुल पहले से ही प्रारंभ हो गया है। अब यहां पर अन्य अनेक ऐसी गतिविधियां प्रारंभ होगी जिनमें संपूर्ण विश्व के आर्यजन समय-समय पर उपस्थित होकर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करेंगे। यहां से विद्या प्राप्त करके आर्य समाज के युवा भारत के कोने कोने में और विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार और विस्तार करेंगे।

ज्ञात हो कि इस वैदिक विद्या केंद्र का शिलान्यास 19 जुलाई 2022 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय

-शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प

नए प्रचारकों के 45 दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का शुभारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव आर्य समाज के उत्थान, प्रचार, प्रसार और विस्तार के लिए प्रयासरत रहती है। वर्तमान में आर्य समाज के प्रचार की आवश्यकता को देश के कोने कोने में और विदेशों में भी समस्त आर्य जगत अनुभव कर रहा है। क्योंकि चारों तरफ भोली-भाली जनता धर्म के नाम पर डर और प्रलोभन का शिकार होकर दुख, पीड़ा और संताप का ग्रास बन रही है। ढोंग, पाखंड और गरुड़म के अंधविश्वास के खिलाफ आर्य समाज सदैव अपनी आवाज बुलंद करता रहा है । इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए सभा के संवर्धक दिल्ली, एन सी आर में और भारत के विभन्न प्रांतों में यज्ञ, योग, सत्संग, सेवा और नव निर्माण की अन्य गतिविधियों को आगे बढ़ाने का कार्य कुशलता पूर्वक कर रहे हैं।

आधुनिक परिवेश में केवल वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को आर्य समाज की परिधि में प्रचारित करने से काम चलने वाला नहीं है, यह सब भली भांति जानते हैं क्योंकि संपूर्ण विश्व में अनेक अन्य संस्थाएं, संगठन अपने मत और संप्रदायों के प्रचार-प्रसार में पूरी तकनीकी सुविधाओं के साथ दिन-रात लगी हुई है। इसलिए आर्य समाज भी अपनी पूरी शक्ति के साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए

लगातार कार्य कर रहा है। इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के अंतर्गत चौथे ग्रुप का प्रशिक्षण शिविर 8 सितंबर 2024 से आर्य समाज हनुमान रोड के प्रांगण में आयोजित किया गया, जिसका विधिवत उद्घाटन करने के लिए श्री योगानंद शास्त्री जी, श्री सत्यानंद आर्य जी, श्री कन्हैयालाल आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी और कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर सभी शिवरार्थियों को आर्ष साहित्य एवं महर्षि दयानंद सरस्वती कृत ग्रंथ प्रदान किए गए और सभी शिवरार्थियों को आर्य समाज के नेताओं ने हार्दिक शुभकामनाएं भी प्रदान की।

ज्ञात हो कि यह प्रशिक्षण शिविर डेढ़ महीने तक चलेगा, वैदिक धर्म के प्रचार को आगे बढ़ाने के लिए ये सभी धर्म प्रचारक कृत संकल्प के धनी बन जाएंगे और आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित हो जाएंगे। इस प्रकल्प का एक ही उद्देश्य है कि समाज के प्रत्येक वर्ग को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं से अवगत कराना है, साथ ही आर्य समाज के प्रचार कार्य के माध्यम से सक्रियता प्रदान करनी है, आर्य समाज के स्कूलों में वैदिक ज्ञान व शारीरिक व्यायाम तथा चरित्र निर्माण और आर्यवीर दल की शाखों को आगे बढ़ना है, युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ना है, और हर स्तर पर वैदिक धर्म का प्रचार करना है।

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर

आर्य समाज लेखू नगर-त्रिनगर दिल्ली में तीन दिवसीय समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर आर्य समाज लेखू नगर, त्रिनगर द्वारा 13 सितंबर से 15 सितंबर तक तीन दिवसीय भजन संध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान एवं निगम पार्षद कोहाट, दिल्ली से श्री अजय रविहंस ने की।

इस कार्यक्रम को श्री विनय आर्य जी महामंत्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने संबोधित किया। श्री विनय आर्य जी ने अपने क्रान्तिकारी उदबोधन में सभी आर्यजनों को पिछड़ी जातियों और दलितो को गले लगाने और अपने आपको जागृत करने और अपने परिवार को समय देने का संकल्प दिलवाया। आचार्या डॉ कल्पना जी ने भी अपने क्रान्तिकारी विचारो से सभी को लाभान्वित किया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

कैप्टन रुद्रसेन आर्य - संरक्षक, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती- प्रधान, एवं श्री दुष्मंत स्वाई मन्त्री निर्वाचित

रविवार दिनांक 15 सितम्बर, 2024 को गुरुकुल आश्रम आमसेना में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि, नई दिल्ली से संबद्ध उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ओडिशा का त्रैवार्षिक निर्वाचन संपन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से कैप्टन रुद्रसेन आर्य को संरक्षक एवं स्वामी धर्मानंद सरस्वती को पुन: प्रधान चुना गया। साथ ही **कार्यकारी प्रधान** - स्वामी व्रतानंद सरस्वती एवं पं. वीरेन्द्र कुमार पंडा, **उप प्रधान** - स्वामी विशुद्धानंद सरस्वती, श्री सोमदत्त शास्त्री, श्री चित्तरंजन पंडा और श्री मनोरंजन बाबू, **मन्त्री**- श्री दुष्मंत स्वाई, **उपमंत्री** - श्री राजकुमार बराड, श्री रमेश कुमार भाई, डॉ. कुमेंद्र पटेल एवं **कोषध्यक्ष** - श्री सुरेद्र कुमार मिश्र को निर्वाचित किया गया। **मीडिया प्रभारी** की जिम्मेदारी श्री सुनील कुमार डे को दी गई और **वेद प्रचार अधिष्ठाता** - पं. लक्ष्मण कुमार शास्त्री, स्वामी वेदानन्द शास्त्री और श्री मनुदेव शास्त्री को बनाया गया। इसके साथ ही 9 अन्तरंग सदस्यों, 4 आमन्त्रित प्रतिनिधि सदस्यों, निर्वाचन/आमन्त्रित सदस्य एवं 4 सदस्यी उपदेष्टा मंडली का निर्वाचन भी किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

साप्ताहिक स्वाध्याय

दिल्ली-दरबार में और पंजाब की ओर

गतांक से आगे-

पंजाबी के सोचने और करने में थोड़ा ही अन्तर है। अन्य प्रान्तों के लोग समझ ही नहीं सकते कि एक पंजाबी ने कब सोचा, कब कहा और कब किया। जितनी देर में उनका सोचना समाप्त होता है, उतने में पंजाबी कर डालता है। एक सुधारक को इससे अच्छा मैदान कहां मिल सकता है? महर्षि जी पंजाब में बहुत पीछे गए, परन्तु उन्हें वहां आशातीत सफलता हुई। उस सफलता में पहला कारण पंजाबियों के हृदयों की ग्रहणशीलता थी। दूसरा कारण यह भी था कि भारत के सीमाप्रान्त पर होने के कारण अधिक कट्टरपन या संकुचितता उनमें पहले से नहीं थी। महर्षि जी की दिव्यवाणी ने पंजाबियों के नर्म हृदयों पर बिजली का सा असर किया। अन्य प्रान्तों में वह जो कार्य महीने में न कर सके, पंजाब में उसे सप्ताहों में कर दिया।

जिस समय महर्षि जी पंजाब में आए, ईसाई पादरी पकी खेती को दोनों हाथों काट रहे थे। पंजाब का शिक्षित समाज ईसाइयों के पंजे में पड़ रहा था। थोड़ा-थोड़ा काम ब्राह्मोसमाज भी कर रहा था। कुछेक पठित लोग इकट्ठे होकर ब्राह्मोप्रार्थना भी कर लेते थे। महर्षि को पंजाब में विशेष युद्ध ईसाइयों से ही करना पड़ा। जहां कहीं भी वह गए, कई हिन्दू युवकों को ईसाई होने से बचाया। आर्यसमाज से ईसाइयों का विद्वेष-भाव, जिसने बाद में बड़ा भयानक रूप पकड़ा और गम्भीर परिणाम उत्पन्न किये, इसी समय से आरम्भ होता है। ईसाई पादरी आर्यसमाज की बढ़ती को न सह सके; उन्होंने समझा कि आर्यसमाज उनके मुंह से ग्रास छीनकर ले गया। पंजाब में महर्षि दयानन्द के आने और सफलता पाने के विषय में सबसे उत्तम यही वाक्य प्रयुक्त किये जा सकते हैं कि वह आए, उन्होंने देखा, और जीत लिया।

महर्षि जी के हृदय में सत्य का जो स्थान था, वह दूसरी किसी वस्तु का नहीं था। जिसे वह सत्य समझते थे, उस पर सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार थे। आप पहले दीवान रत्नचन्द्र के बंगले में ठहराए गए। महर्षि के व्याख्यानों से दीवान साहब असंतुष्ट हो गए। महर्षि जी ने उनका स्थान छोड़ दिया, परन्तु बात नहीं छोड़ी। आपको लाहौर में निमंत्रित करने वालों में बहुत से ब्राह्मो समाजी सज्जन थे। महर्षि जी के वेद-सम्बन्धी व्याख्यानों से ब्राह्मो समाजी असन्तुष्ट हो गए। पं० शिवनारायण अग्निहोत्री, जो बाद में सत्यानन्द अग्निहोत्री बनकर, और संन्यस्त दशा में ही नया विवाह करके ईश्वर के स्थानापन्न 'देवगुरु भगवान्' होने का दावा करने वाला बना, उस समय ब्राह्मो समाज का प्रचारक था। वह वेदों के विषय में निर्मूल आक्षेप करने में अगुआ था। एक दिन कई सज्जनों की उपस्थिति में वह महर्षि जी से कहने लगा कि सामवेद ईश्वरीय नहीं हो सकता। उसमें तो उल्लू की कहानी लिखी है। स्वामी जी ने सामवेद की पुस्तक सामने रखकर कहा- इसमें से उल्लू की कहानी निकालकर दिखाओ! ब्राह्मो समाजी वेदों को निर्भ्रान्त नहीं मानते थे, परन्तु उनकी पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की हुई टीकाओं को अवश्य निर्भ्रान्त मानते थे। अग्निहोत्रीी जी ने निर्भ्रान्त टीका के आधार पर ही वेदों को भ्रान्त बतलाया था। मूल वेद में से वह कुछ भी न निकाल सके- केवल पन्ने पलटने लगे। महर्षि जी ने उन्हें शर्मिन्दा किया। ऐसी बातों से ब्राह्मो समाजी असंतुष्ट हो गए और महर्षि जी के डेरे को आर्थिक सहायता देनी बंद कर दी। तब पण्डित मनफूल जी की ओर से टहल-सेवा होने लगी। पण्डित मनफूल जी के विचार तो उत्तम थे, परन्तु महर्षि जी के मूर्तिपूजा-खण्डन से वह भी कुछ घबरा गए। उधर कश्मीर नरेश की ओर से महर्षि जी को फिर संदेश आया। दिल्ली में भी उन्हें संदेश मिला था। नरेश ने महर्षि को कश्मीर में निमंत्रण दिया था। महर्षि जी ने उत्तर में कहलवा भेजा था कि- कश्मीर राज्य में राजा की ओर से बनवाए हुए बहुत से मंदिर हैं। मैं मूर्तिपूजा का खण्डन करूंगा, इससे राजा को दु:ख होगा। लाहौर में पण्डित मनफूल जी ने फिर महर्षि जी के सम्मुख वही विषय रखा। निवेदन किया कि यदि आप मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दें तो महाराज कश्मीर भी आपको बुला लें। उस समय महर्षि जी ने जो उत्तर दिया, वह उनके महत्त्व का सूचक है। उससे ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द साधरण मिट्टी से नहीं बने थे; वह उसी फौलाद से बने थे, जिससे बुद्ध, ईसा, मुहम्मद या लूथर का निर्माण हुआ था। आपने कहा- मैं लोगों को या महाराज कश्मीर को प्रसन्न करूं या ईश्वरीय आज्ञा का पालन करूं?

इस उत्तर से पण्डित मनफूल जी का संकुचित हृदय और भी भिन्न हो गया। महर्षि जी के हृदय की गहराई को पहचानने के स्थान पर उन्होंने इस उत्तर में अपना अधिक्षेप समझा। शीघ्र ही शहर के शिक्षित समाज में हलचल पैदा हो गई। पंजाबियों के कोमल हृदयों पर ऋषि की दी हुई चोटों का असर होने लगा। आर्यसमाज की स्थापना का निश्चय हो गया। यहां बम्बई में प्रचारित किए हुए नियमों का संशोधन किया गया, और नियम तथा उपनियम जुदा कर दिये गए। आर्यसमाज के सभासद् बनने के लिए केवल 10 नियमों को मानना ही पर्याप्त समझा गया। बम्बई के नियम बहुत विस्तृत थे, लाहौर के नियम बहुत संक्षिप्त बनाए गए।10 नियमों का निर्धारण, आर्यसमाज की स्थापना और वृद्धि का एक खास पड़ाव है। यह नहीं समझना चाहिये कि नए नियम संस्कार में कोई विशेष कारण या उद्देश्य नहीं था। इतना समझ लेने से पूरा महत्त्व सूचित नहीं होता कि किन्हीं एक या एक से अधिक व्यक्तियों ने अपनी सम्मतियों का प्रभाव डालकर यह परिवर्तन करवाया। नियमों का संस्करण संगठन की एक विशेष मंजिल है। यह एक विशेष घटना है, जिसके कारणों और फलों पर विचार करना चाहिये। महर्षि दयानन्द के जीवन में ये नियम संस्कार एक विशेष मानसिक फैलाव को सूचित करते हैं, और इस ग्रन्थ के लेखक का विचार है कि इस फैलाव को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानन्द को केवल सुधारक संन्यासी न मानकर आर्य जाति का भविष्यदर्शी, परमात्मा के सार्वभाम सन्देश को सुनाने वाला महर्षि माना जाय और महर्षि जी के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया जाय। **-क्रमशः**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

In Delhi-Durbar and towards Punjab

The place of truth in the heart of Maharishiji was not that of any other thing. He was ready to sacrifice everything for what he believed to be true. You were first accommodated in the bungalow of Diwan Ratna chandra. Diwan Saheb became dissatisfied with Swamiji's lectures. Swami ji left his place, but did not leave the matter. There were many Brahmo Samaj gentlemen who invited him to Lahore. Brahmo Samaj is became dissatisfied with Swamiji's lectures related to Vedas. Pandit Shivnarayan Agnihotri, who later became Satyananda Agnihotri and remarried while still in sannyast condition and claimed to be God's substitute 'Devguru Bhagwan', was a preacher of Brahmo Samaj at that time. He was the leader in making blatant objections about the Vedas. One day in the presence of many gentlemen he started telling Swami ji that Samved cannot be divine. The story of an owl is written in it. Swami ji kept the book of Samved in front of him and said- 'Extract the story of owl from it and show it!' The Brahmo Samajis did not consider the Vedas to be infallible, but they definitely considered the commentaries made by western scholars to be infallible. Agnihotri ji had declared the Vedas to be illusory only on the basis of Nirbhrant Tika. He could not extract anything from the original Vedas – he started turning the pages only. Swamiji embarrassed him. Brahmo Samaj became dissatisfied with such things and stopped giving financial assistance to Swamiji's Dera. Then Pandit Manphool ji started walking and serving. Pandit Manphoolji's thoughts were good, but he also got a bit scared of Swami ji's idolatry. On the other hand, Swamiji again received a message from the King of Kashmir. He had received the message in Delhi as well. King had invited Swamiji to Kashmir. Swami ji had sent a message in reply that - 'There are many temples built by the king in the state of Kashmir. I will condemn idol worship, it will harm the king." In Lahore, Pandit Manphool ji again raised the same issue in front of Swami ji. Requested, ''if you leave the worship of idols, then Maharaj Kashmir should also invite you. ''The answer given by Swamiji at that time is an indicator of his importance. From this it is known that Swami Dayanand was not made of ordinary clay- he was made of the same steel from which Buddha, Jesus, Muhammad or Luther were made. You said - 'Should I please the people or Maharaj Kashmir or follow the divine command?' Pandit Manphool ji's narrow heart became even more divided by this answer. Instead of recognizing the depth of Swami ji's heart, he understood his objection in this answer.

Soon there was a stir in the educated society of the city. The wounds inflicted by the sage began to affect the tender hearts of the Punjabis. It was decided to establish Arya Samaj. Here the rules promulgated in Bombay were revised, and the rules and bye-laws were separated. To become a member of Aryasamaj, it was considered sufficient to follow only 10 rules. The Bombay rules were very detailed, the Lahore rules were made very concise.

Determination of 10 rules is a milestone in the establishment and growth of Arya Samaj. It should not be understood that the New Testament sacrament had no specific reason or purpose. Understanding this much does not indicate the full importance that any one or more persons got this change done by influencing their opinions. The edition of the rules is a special step of the organization. This is a special phenomenon, the causes and consequences of which must be considered. These rules and rituals indicate a special mental expansion in the life of Rishi Dayanand, and the author of this book thinks that keeping this expansion in mind, Swami Dayanand should not be considered only as a reformer ascetic, the future prophet of the Aryan race and the universal messenger of God. Rishi should be used with his name.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

पितृयज्ञ का पालन करना ही है - सच्चा श्राद्ध

महाभारत काल के बाद कुछ शताब्दियों में हमारी संस्कृति पर अनेक प्रहार हुए। परिणामस्वरूप मानवीय मूल्यों के अवटूटन के साथ-साथ समाज के अभिन्न अंग माता-पिता और बड़े- बुजुर्गों के सम्मान के प्रति समाज में बड़ा बदलाव आया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, भीष्म पितामह, श्रवण कुमार और नचिकेता आदि महापुरुषों के देश में जहां माता-पिता की आज्ञाओं को, उनके सेवा और सम्मान को सर्वोपरि माना जाता था। वहीं आज जीवित माता-पिता अपमान और तिरस्कार का जीवन जीने के लिए मजबूर तथा बेबस नजर आते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में, टी.वी. चैनलों पर दिल दहलाने वाली खबरें आती है कि अमुक स्थान पर स्वार्थवश कोई पुत्र अपने पिता को जान से मार देता है या कोई पुत्री अपनी मां को प्रताड़ित करते हुए नजर आती है। इससे बड़ी विडम्बना यह है कि जीवित माता-पिता को तो हर तरह की पीड़ा और कष्ट झेलने के लिए मजबूर किया जाता है। लेकिन जब वें नहीं रहते, उनके मर जाने के बाद वर्ष में एक बार, एक दिन उनके श्राद्ध के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन आदि कराकर यह समझा जाता है कि हमने अपने माता-पिता और पूर्वजों को भोजन कराया है। और यह कर्म भी लोग डर के मारे करते हैं। क्योंकि स्वार्थी ब्राह्मणों ने समाज में यह डर पैदा किया हुआ है कि अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको पितृ दोष लग जाएगा। आपका आहित हो जाएगा, आप पाप के भागीदार होंगे। इन सब निराधार बातों को आधार बनाकर लोग अपने मृतक पितरों के लिए हर वर्ष आश्विन मास में पंद्रह दिनों तक श्राद्ध रूपी अंधविश्वास से भरे आयोजन करते हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने पंच महायज्ञों में एक पितृ यज्ञ करने का विधान हमें बताया है। जिसमें हमें अपने जीवित माता-पिता की सेवा श्रद्धापूर्वक करनी चाहिए। उनके लिए भोजन, वस्त्र, औषधि आदि का प्रबंध करना चाहिए। वह भी वर्ष में एक बार नहीं बल्कि आजीवन करना चाहिए। आर्य समाज पितृ यज्ञ को ही श्राद्ध का वैदिक स्वरूप मानता है। अपने जीवित माता-पिता, दादा-दादी और बड़े-बुजुर्गों की सेवा करके उन्हें सन्तुष्ट करने को ही अपना कर्त्तव्य मानता है। अगर गहराई से विचार किया जाए तो वास्तव में जो जीवित हैं उन्हीं की तो हम सेवा कर सकते हैं जो नहीं रहें उनकी सेवा कैसे संभव हो सकती है? उन्हें कोई कैसे भोजन करवा सकता है? जो ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है वह तो उसके निजी जीवन को पुष्टि देता है, सन्तुष्ट करता है और जिनके नाम पर श्राद्ध के रूप में उन्हें भोजन कराया जाता है। ब्राह्मण को क्या पता कि वे कहां पर हैं? किस योनि में हैं?क्योंकि ईश्वरीय कर्म सिद्धांत के साथ अनुसार मृत्यु के कुछ समय पश्चात् ही आत्मा नया शरीर धारण कर लेता है। शरीर के रूप में उसे कौन सा, कैसा शरीर मिला तथा उसका आहार क्या होगा? किसी को क्या पता? लेकिन समाज में बिना सोचे-समझे बस एक परंपरा स्थापित हो गई, जिसे लोग बिना विचारें ही निभाते चले जा रहे हैं।

एक बूढ़ी माता ने अपने पति का श्राद्ध करने हेतु ब्राह्मण को निमंत्रण दिया। अगले दिन जब ब्राह्मण भोजन करने के लिए आया तो भोजन बनने में थोड़ा विलंब था। उस बीच माता का बेटा पंडित जी से बात करने लगा। उसने पंडित जी से पूछा कि ब्राह्मण महाराज जो हम आपको भोजन कराएंगे क्या वह हमारे पिता के पास पहुंच जाएगा? क्या उस भोजन से उनको सन्तुष्टि मिलेगी? ब्राह्मण ने कहा हां जो आप मुझे भोजन कराएंगे आपके पिता तक पहुंच जाएगा। उस नौजवान ने पुन: प्रश्न किया कि फिर तो आप यह भी जानते होंगे कि मेरे पिता कौन-सी योनि में है, उन्हें कौन-सा शरीर मिला है? ब्राह्मण ने कहा यह तो मैं नहीं जानता। नौजवान ने पूछा जब आप यह नहीं जानते कि उन्हें कौन-सा शरीर मिला है और उनका आहार क्या है तो फिर यह भोजन उनके पास कैसे पहुंचेगा? तभी अंदर से जो माता भोजन बना रही थी वह एक इंक्जेंशन लेकर बाहर निकली और इन्जेकशन में इन्सुलिन भरते हुए बोली की पंडित जी मेरे पति शुगर के मरीज थे। इसलिए वे भोजन करने से पहले इन्सुलिन का इन्जेकशन लगवाते थे। कृपा करके आप भी पहले इन्सुलिन लें, फिर भोजन ग्रहण करें। इतना सुनते ही ब्राह्मण घबराकर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा कि ऐसे थोड़े ही होता है, ऐसा तो हमने आज तक नहीं देखा। नौजवान कहने लगा जब भोजन आप पहुंचा सकते हो तो इन्सुलिन क्यों नहीं पहुंचा सकते हो? चाहे ये बात कहने के लिए ही क्यों न हो लेकिन है तो विचारणीय।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक यात्री है। इस यात्रा में न जाने हमारे अब से पहले कितने जन्म हुए हैं और आगे न जाने कितने जन्म होंगे? जहां पर हम पहले जन्में थे वहां पर भी कोई हमारा श्राद्ध मनाता होगा लेकिन कभी किसी के पास कोई लंच बाक्स आता है क्या? और फिर अगर कोई वर्ष में एक दिन भोजन किसी को करा भी दे और यह समझें कि हमने अपने माता-पिता या पूर्वजों को भोजन कराया है तो इसका मतलब 365 दिन में एक दिन भोजन करा दिया बाकि 364 दिन क्या वें भूखे रहेंगे? वास्तव में जीवित माता-पिता और वृद्धजनों की सेवा करना, उन्हें अपनी सेवा से सन्तुष्ट रखना ही सच्चा श्राद्ध है।

आधुनिक परिवेश में सबसे ज्यादा अगर उपेक्षा किसी की हो रही है तो वे माता-पिता और वृद्धजन हैं। आज का युवा माता-पिता और घर के बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना भूलता ही जा रहा है। और यह भी नहीं समझ पा रहा है कि वर्तमान में जो मैं कर रहा हूं, कल वहीं मेरे सामने घटित होने वाला है। जैसे बीज मैं बो रहा हूं वैसे ही तो फल मुझे प्राप्त होंगे। लेकिन इससे बड़ी विडम्बना की बात यह है कि घरों में माता-पिता और वृद्धजन अपमान और तिरस्कार का जीवन जीते हुए भी अपनी व्यथा को किसी से कह नहीं सकते, अगर कोई उन्हें यह कहता भी है कि आपके बच्चे आपको परेशान करते हैं, आपकी सेवा नहीं करते, यह तो गलत बात है। तब माता-पिता कहते हैं कि ऐसी बात नहीं है। यह तो कलयुग है, यह तो समय का फेर है, आजकल सभी बच्चे ऐसे ही हैं, हमारे बच्चे तो बहुत अच्छे हैं, अगर थोडा बहुत कुछ कहते सुनते भी हैं तो कोई बात नहीं, तो अपने ही, इस तरह से वह अपने मन को समझा लेते हैं। क्योंकि दूसरों के सामने अपने बेइज्जती कराने में क्या फायदा? अपने बच्चों की बुराई करके अपने ही पगड़ी को उछालना जैसा है। लेकिन यहां पर यह भी विचार करना चाहिए कि जैसे उन्होंने अपने माता-पिता के साथ किया होगा, वैसा ही फल उन्हें प्राप्त होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवित माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, उनकी सही आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और उनका उचित सम्मान करना चाहिए।

- आचार्य अनिल शास्त्री

पृष्ठ 5 का शेष

श्री अंकित शास्त्री जी के मधुर भजनों का सभी आर्यजनों ने आनन्द उठाया। समापन के अवसर पर रविवार को पांच कुंडीय यज्ञ किया गया, ब्रह्मा आचार्य आनन्द जी और आचार्य यदुनाथ शास्त्री जी थे। समारोह में क्षेत्र के गणमान्य महानुभाव श्री विरेन्द्र गोयल, (जिला अध्यक्ष केशव पुरम), श्री जोगेन्द्र खट्टर (महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद), श्री सतीश चड्ढा, महामंत्री (आर्य केन्द्रीय सभा), श्रीमती मीनू गोयल (निगम पार्षद), श्री मनीष भाटिया (कोषाध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा), श्री जितेंद्र सैनी (समाजसेवी म्यांमार) ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

इस कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन महामंत्री श्री अजय कालरा जी द्वारा किया गया। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों और आर्य समाज के अधिकारियों श्री हर्ष वर्धन आर्य, श्री अजय भाटिया, श्री ईश्वर पाल आर्य, श्री नवीन सेठी जी , डॉ. तृप्ति शास्त्री, श्री राजेश सिंघल, श्री अजय कालरा अशोक विहार, श्री संजय आर्य, श्री अनिल गुप्ता जी, श्री नरेंद्र कालरा, श्री संजय सैनी, श्री अरविंद हंस, श्री आशीष जी, श्री तुलसी प्रजापति, श्री अनिरुद्ध जी ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपना विशेष योगदान देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। - ***मन्त्री***

आर्यसमाज हौजखास, नई दिल्ली

श्रावणी एवं वेद प्रचार सप्ताह

22 से 29 सितम्बर, 2024

वेद कथा

22 से 25 सितम्बर : डॉ. छविकृष्ण शास्त्री

26 से 29 सितम्बर : श्री प्रियव्रत शास्त्री

- श्रीमती शशि गुप्ता, प्रधान

(9717855440)

आर्यसमाज कालकाली नई दिल्ली

श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महायज्ञ

26 से 29 सितम्बर, 2024

ब्रह्मा-प्रवचन : डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री

भजन : श्रीमती संध्या ढींगरा

पूर्णाहुति एवं विशिष्ट सम्मेलन

29 सितम्बर प्रात: 8 से 1 बजे

- रमेश गाड़ी, प्रधान

आर्यसमाज हडसन लाइन, दिल्ली में

माता रुक्मिणि देवी जी की स्मृति में

श्राद्ध के वास्तविक स्वरूप पर व्याख्यान, यजुर्वेद महायज्ञ एवं भजनोपदेश

21 से 22 सितम्बर, 2024

ब्रह्मा : डॉ. सत्यकाम शर्मा

प्रवचन : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री

आचार्य विनोद कुमार शास्त्री

भजन : डॉ. कैलाश कर्मठ

-सुरेन्द्र पाल, प्रधान

पृष्ठ 4 का शेष

प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने किया था और 15 सितंबर 2024 को जब इसका उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। तो इसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री अननैदासन जी (तंजौर), श्री चंद्र प्रकाश जी (उत्तराखंड), श्री गुरु दत्त जी (गुजरात,) मेजर जनरल एन.के. बाबू जी, श्री मुकेश वर्मा जी (इंदौर), श्री रवि आर्य जी (सिलीगुड़ी), जानवी भार्गव जी एवं डॉ. सुमित्रा जी (बेंगलुरु) आदि 100 से अधिक महानुभावों को विद्या केंद्र की ओर से सम्मानित किया गया और उनको प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया।

इसके उपरांत वैदिक विद्या केंद्र में संचालित गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया, जिसमें नियुद्धम, लाठी, भाला, तलवार और सर्वांग सुंदर व्यायाम का प्रदर्शन देखकर उपस्थित जनसमूह भाव विभोर हो गया। गुरुकुल के आचार्य श्री विमल जी और ब्रह्मचारियों का यह अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन अपने आप में अनुपम और आकर्षक सिद्ध हुआ। वैदिक विद्या केंद्र के अंतर्गत आर्य युवा आत्मनिर्भर योजना यहां गतिशील है, जिसमें प्रशिक्षित युवाओं को कौशल विकास के साथ वैदिक प्रचारक बनाने का भी प्रयास किया जा रहा है। ताकि वे अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते हुए भारत राष्ट्र के उत्थान में भी अहम भूमिका निभा सके। इस कार्यक्रम में डीएवी स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा अत्यंत प्रेरक नाटिका संस्कृत और मराठी में प्रस्तुत की गई, भजन संध्या का कार्यक्रम अपने आप में मनमोहक और प्रेरक सिद्ध हुआ। वैदिक विद्या केंद्र के सभी जिज्ञासुओं और आर्यजनों को आमंत्रित किया गया कि यहां आकर आप अपने जीवन को गरिमा प्रदान करें और राष्ट्र उत्थान में सहयोगी बनें। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए आप निम्नलिखित वेबसाइट पर भी सर्च कर सकते हैं । - ***पियूष आर्य, उप प्रधान***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 सितम्बर, 2024 से रविवार 22 सितम्बर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 19-20-21/09/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18, सितम्बर, 2024

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी
की 200वीं जयंती पर

संगोष्ठी

आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं
के अधिकारियों की एक दिवसीय गोष्ठी

आर्य समाज द्वारा संचालित विभिन्न कार्यों, प्रकल्पों,
योजनाओं, गतिविधियों की जानकारी एवं समीक्षा

बुधवार, 2 अक्टूबर 2024, प्रात 7:30 से सायं 6 बजे
आर्य समाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश - 1, नई दिल्ली - 48

सभी साथी प्रातः कालीन नाश्ता, दोपहर का
भोजन तथा सायं का अल्पाहार मिलकर करेंगे
कृपया अपनी आर्य समाज एवं महिला आर्य समाज के प्रमुख
अधिकारियों के साथ अनिवार्य रूप से पधारना सुनिश्चित करें
अतः तिथि और कार्यक्रम को नोट करें

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	सुरेन्द्र कुमार रैली	मनीष भाटिया	आर्य सतीश चड्डा
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा | आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

रविवार, 6 अक्टूबर 2024, प्रात : 11 बजे से
स्थान : आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 01

ऑनलाइन पंजीकरण करें bit.ly/parichay2024
अथवा QR कोड स्कैन करें

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

आर्य सतीश चड्डा	विभा आर्या	वीना आर्या	रश्मि वर्मा
राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक	सहसंयोजक	सहसंयोजक
9313013123	9873054398	9810061263	9971045191

नोट : विधवा-विधुर, तलाकशुदा, विकलांग तथा 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के युवक युवतियों के लिए विशेष सुविधा

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — **सत्यार्थ प्रकाश** — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹ 80 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 60	मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80	मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	**स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8**	**उपहार संस्करण**
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100	मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120	मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	
मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160	मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200	

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी
की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह